अध्याय -IV

सरकारी क्षेत्र

स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड (सेल)

सामान्य

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (सेल) कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत एक पंजीकृत कंपनी है। यह भारत सरकार का उद्यम है। यह भिलाई (छत्तीसगढ़), बोकारो (झारखण्ड), दुर्गापुर (प.बंगाल) तथा राउरकेला (उड़ीसा) में स्थित चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों का प्रचालन एवं प्रबंधन करती है। इसके अतिरिक्त, इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (इस्को) जो सेल के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी है, के स्वामित्व में बर्नपुर में इसका एक और एकीकृत इस्पात संयंत्र है।

सेल के दुर्गापुर (प.बंगाल), सेलम (तमिलनाडु) और भद्रावती (कर्नाटक) में स्थित विशेष और मिश्र इस्पात तथा फैरो मिश्र के तीन इस्पात कारखानें भी हैं। इसके अतिरिक्त, चंद्रपुर स्थित संयंत्र महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड जो फैरो मिश्र का उत्पादन करने वाला संयंत्र है, भी सेल की सहायक कंपनी है। ''इस्को'' की सहायक कंपनी, इस्को-उज्जैन पाइप एंड फाउण्ड्री कंपनी लिमिटेड, अपने उज्जैन (मध्यप्रदेश)स्थित कारखाने में कास्ट ऑयरन स्पन पाइपों का उत्पादन करती थी, का परिसमापन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त ''सेल'' की सात केंद्रीय इकाइयां

बैसिक आक्सीजन फर्नस, दुर्गापुर, सेल

अर्थात लोहा और इस्पात अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (आर.डी.सी.आई.एस.), इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (सी.ई.टी.), प्रबंध प्रशिक्षण संस्थान (एम.टी.आई.) हैं। ये सभी रांची में स्थित हैं। धनबाद में केन्द्रीय कोयला आपूर्ति संगठन, कोलकाता में कच्चा माल प्रभाग, ग्रोथ प्रभाग तथा पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग हैं। ये सभी कोलकाता में स्थित हैं। सेल का परामर्श प्रभाग (सेलकॉन) दिल्ली में कार्य करता है। ''सेल'' के संयंत्रों में उत्पादित माल का विपणन कार्य कलकत्ता स्थित केंद्रीय विपणन संगठन करता है जिसके देश भर में विपणन केन्द्र हैं। कारोबार पुनर्संरचना के भाग के रूप में दिनांक 9 फरवरी, 1999 को एक सहायक कम्पनी के रूप में भिलाई आक्सीजन लिमिटेड (बी ओ एल) को निगमित किया गया है।

पूंजीगत ढांचा

''सेल'' की प्राधिकृत पूंजी 5,000 करोड़ रूपए है। 31 मार्च 2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी की चुकता पूंजी 4,130.40 करोड़ रुपए थी जिसमें 85.82% भारत सरकार की तथा शेष 14.18% वित्तीय संस्थाओं/जी.डी.आर. धारकों/ बैंकों/कर्मचारियों/व्यक्तियों आदि की थी।

वित्तीय निष्पादन

कंपनी ने 2002-2003 में 19207 करोड़ रुपए का रिकार्ड बिक्री कारोबार किया । वर्ष 2002-03 में कर पश्चात निवल हानि 304.31 करोड़ रूपए थी।

2003-2004 के दौरान 24178 करोड़ रुपए के बिक्री कारोबार से 31 मार्च, 2004 को समाप्त वर्ष के लिए कंपनी का सकल मार्जिन (मूल्यह्रास और ब्याज से पूर्व लाभ) और कर पश्चात निवल लाभ क्रमश: 4650 करोड़ रुपए तथा 2512 करोड़ रु. था। ऋण में कमी करने पर बल दिया जाता रहा। ऋण घटकर 4239 करोड़ रुपए हो गया है जबकि 31 मार्च, 2003 को कुल ऋण 12928 करोड़ रु. था तथा 31 मार्च, 2004 को घटकर 8689 करोड़ रुपए रह गया। वित्तीय निष्पादन में सुधार होने तथा ऋण में कमी होने से ऋण-साम्या अनुपात 31 मार्च, 2003 के 6.50:1 से बढ़कर 31 मार्च, 2004 को 1.86:1 हो गया। उत्पादन और बिक्री की मात्रा में सुधार बाजारोन्मुखी उत्पाद मिश्र, गहन लागत नियन्त्रण उपायों, श्रम शक्ति को युक्तिसंगत बनाने, ऋण में कमी, बाहय घटकों जैसे इस्पात की मांग में वृद्धि तथा अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू मांग स्थिर होने के कारण कारोबार और वित्तीय निष्पादन में अच्छा सुधार हुआ।

उत्पादन निष्पादन

2002-2003 और 2003-2004 के दौरान चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों की उत्पादन योजना और उपलब्धि का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

(दस लाख टन)

मद	2002-03			2003-04		
	लक्ष्य	वास्तविक	पूर्ति (%)	लक्ष्य	वास्तविक	पूर्ति (%)
तप्त धातु	12.066	12.080	100	12.280	12.749	104
अपरिष्कृत इस्पात	11.343	11.087	98	11.397	11.828	104
विक्रेय इस्पात	10.200	10.086	99	10.300	10.727	104

कच्चा माल

वर्ष 2003-2004 के दौरान आर एम डी और भिलाई इस्पात संयंत्र की निजी खानों द्वारा क्रमशः 209.5 लाख टन और 26.8 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन किया गया। विभिन्न इस्पात संयंत्रों की लौह अयस्क की लगभग सम्पूर्ण आवश्यकता कम्पनी के निजी स्रोतों से पूरी की गई।

कोयला और कोक

कोककर कोयले की खपत

2002-03 और 2003-04 के दौरान सेल के इस्पात संयंत्रों (इस्को सहित), वी एस पी और टिस्को में कोककर कोयले की हुई खपत नीचे दी गई है :

(दस लाख टन)

	स्वदेशी स्रोत		आयात		योग	
	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04
सेल	5.45	5.77	7.21	7.71	12.66	13.48
टिस्को	2.00	2.02	1.75	1.64	3.75	3.66
वीएसपी	0.40	0.45	2.76	2.76	3.16	3.21

सतत् ढलाई संयंत्र, दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, सेल

अकोककर कोयले की खपत

2002-03 तथा 2003-04 के दौरान सेल के इस्पात संयंत्रों (इस्को सहित), वी एस पी और टिस्को में अकोककर कोयले की हुई खपत नीचे दी गई है :

(दस लाख टन)

	2002-03	2003-04
सेल	4.13	4.43
टिस्को	0.80	0.73
वीएसपी	1.36	1.38

वर्ष 2003-04 के आंकड़े अनन्तिम है।

जनशक्ति

वर्ष	कार्यपालक	गैर-कार्यपालक	योग
2002-03	15078	122418	137496
2003-04	14870	117040	131910

सहायक कम्पनियां

(1) इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड

इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड (इस्को) का बर्नपुर में एक एकीकृत इस्पात कारखाना, गुआ और मनोहरपुर में निजी लौह अयस्क की खानें, चासनाला, जीतपुर, रामनगर में कोयले की निजी खानें, चासनाला में कोयला धोवनशाला और कुल्टी में एक विशाल फाउंड्री कॉम्पलेक्स है, जिनका यह प्रचालन करती है। केन्द्र सरकार द्वारा इस्को के प्रबंधन का अधिग्रहण 14 जुलाई, 1972 को किया गया था। प्राइवेट पार्टियों के धारित शेयरों को 17 जुलाई, 1976 को केन्द्र सरकार द्वारा खरीद लिया गया। सरकारी वित्तीय संस्थाओं आदि द्वारा धारित शेयरों को भी केंद्र सरकार द्वारा खरीद लिया गया और बाद में ये सभी शेयर स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड को अंतरित कर दिये। 30 मार्च, 1979 को इस्को पूर्ण रूप से सेल के स्वामित्व में उसकी एक सहायक कंपनी बन गई।

उत्पादन-निष्पादन

2002-2003 तथा 2003-04 के दौरान इस्पात संयंत्रों का उत्पादन निष्पादन नीचे दिया गया है :

हजार टन

	2002-03			2003-04		
	योजना	वास्तविक	पूर्ति (%)	योजना	वास्तविक	पूर्ति (%)
तप्त धातु	745.00	672.00	90.20	810.00	641.5	79.2
अपरिष्कृत इस्पात	370.00	327.00	88.30	423.00	301.0	71.2
कच्चा लोहा	332.00	280.00	84.30	335.00	222.3	66.4
विक्रेय इस्पात	351.00	264.00	75.20	352.00	257.6	73.2

वित्तीय निष्पादन

31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत और प्रदत्त पूंजी क्रमश: 550 करोड़ रुपए और 387. 67 करोड़ रुपए रही।

2003-2004 के दौरान कम्पनी ने 1051.26 करोड़ रुपए का बिक्री कारोबार किया और 27.09 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया जबकि 2002-03 के दौरान 924.21 करोड़ रुपए का कारोबार और 182.23 करोड़ रुपए की निवल हानि हुई थी।

जनशक्ति : कम्पनी की कुल जनशक्ति नीचे दी गई है:-

वर्ष	कार्यपालक	गैर-कार्यपालक	योग
2002-03	936	18535	19471
2003-04	878	16112	16990

(2) महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड (एम ई एल)

महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड (एम ई एल) चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में स्थित है और यह सेल की एक सहायक कम्पनी है। यह सेल के इस्पात संयंत्रों में उनके अपने निजी उपयोग के लिए फैरो मैंगनीज और सिलिका मैंगनीज का प्रमुख उत्पादक है।

उत्पादन निष्पादन

2002-2003 के दौरान फैरो मिश्र के सभी ग्रेडों का उत्पादन निम्नानुसार रहा :- (मीट्रिक टन)

	2001-2002	2002-2003	2003-2004 (अनन्तिम)
उच्च कार्बन फैरो मैंगनीज	47299	57849	24517
सिलिका मैंगनीज	32147	35318	35660
मध्यम कार्बन फैरो मैंगनीज	1052	1939	1398

वित्तीय निष्पादन

31.3.2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत और प्रदत्त शेयर पूंजी क्रमश: 30 करोड़ रुपए और 24 करोड़ रुपए थी। सेल की धारिता प्रदत्त पूंजी का 99.12 प्रतिशत है।

2003-2004 के दौरान कम्पनी ने 152.98 करोड़ रुपए का रिकार्ड कारोबार किया जबकि पिछले वर्ष 189.66

खुशहाल सेल कर्मचारी

करोड़ रुपए का कारोबार किया गया था। कम्पनी ने समग्र परिवर्तन करते हुए निष्पादन किया है और 6.30 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया है जबकि 2002-2003 के दौरान 1.12 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया गया था।

जनशक्ति : कम्पनी की कुल जनशक्ति नीचे दी गई है:-

वर्ष	कार्यपालक	गैर-कार्यपालक	योग
2002-03	133	735	868
2003-04	129	713	842

(3) भिलाई आक्सीजन लिमिटेड

इस कम्पनी की स्थापना सभी प्रकार के आक्सीजन संयंत्रों की अधिप्राप्ति करने, प्रवर्तित करने, विकसित करने, स्थापित करने, स्वामित्व रखने, प्रचालित करने और अनुरक्षण करने तथा इस्पात संयंत्रों, अन्य एजेंसियों और ग्राहकों आदि को आक्सीजन, नाइट्रोजन, एसीटीलीन हाईड्रोजन और अन्य औद्योगिक गैसों की क्षमता, विनिर्माण, खरीद और सप्लाई करने के उद्देश्य से की गई थी। सेल की करोबार पुनर्संरचना के अन्तर्गत भिलाई इस्पात संयंत्र के आक्सीजन संयंत्र-II से संबंधित परिसम्पत्तियों को कम्पनी को अधिग्रहण करना था। पुनर्संरचना प्रक्रिया में विलम्ब होने के कारण अब तक कम्पनी को कोई परिसम्पत्ति हस्तांतरित नहीं की गई है। इस प्रकार, इस अवधि के दौरान कम्पनी द्वारा कोई वाणिज्यिक कार्यकलाप नहीं किए गए। तथापि, कम्पनी ने विविध मदों पर 22,100 रु. खर्च किए । कोई आय न होने के कारण इस अवधि में 22,100 रु. की हानि हुई। सेल के साथ नीतिपरक साझेदार बनने के लिए इच्छुक कंपनियों से सेल ने बिड आमंत्रित किए हैं। सूचीबद्ध पार्टी के साथ विस्तृत विचार विमर्श किया गया जो असफल रहा। कम्पनी के लिए एस ए पी अभिज्ञात करने और चयन करने के लिए सेल ने नए सिरे से प्रयास किए वह भी असफल रहा। बार-बार प्रयास करने के बावजूद उपयुक्त प्रस्ताव प्राप्त नहीं होने के कारण सेल ने आक्सीजन संयंत्र-II के स्वत्वहरण प्रक्रिया को बन्द करने का निर्णय लिया है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल)

भूमिका

राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. (आर आई एन एल) का विशाखापट्टनम में, समुद्र तट पर स्थित प्रथम एकीकृत इस्पात संयंत्र है। इस संयंत्र को प्रतिवर्ष 30 लाख टन द्रव इस्पात का उत्पादन करने की क्षमता से अगस्त, 1992 में चालू किया गया था। सघन ऊर्जा बचत और प्रदूषण नियन्त्रण उपायों को सम्मिलित करते हुए इस संयंत्र को रूपांकन और इंजीनियरी में अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप स्टेट-आफॅ-द-आर्ट प्रौद्योगिकी से बनाया गया है। आर आई एन एल की उत्कृष्ट रूपरेखा वाला है जिसका 100 लाख टन वार्षिक क्षमता से अधिक विस्तार किया जा सकता है। अपने एकीकृत प्रचालन के वर्ष से ही आर आई एन एल ने

मिडियम मर्चेंट एंड स्ट्रक्चरल मिल, आर आई एन एल

उत्कृष्ट गुणवत्ता के अपने उत्पादों से घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपना स्थान बना लिया है। कम्पनी को सभी तीन अन्तर्राष्ट्रीय मानक प्रमाण पत्र नामतः आई एस ओ 9001 : 2000, आई एस ओ 14001 : 1996 और ओ एच एस ए एस 18001 : 1994 मिले हैं। आर आई एन एल/वी एस पी में उत्कृष्ट निगमित नागरिक हैं और इसने इस क्षेत्र में विकास में बल दिया है।

उत्पादन निष्पादन

वर्ष 2002-03 तथा 2003-04 का उत्पादन निम्नलिखित है:-

इकाई : दस लाख टन

मद	2002-03			2003-04			
	समझौता ज्ञापन लक्ष्य	वास्तविक	क्षमता उपयोगिता%	समझौता ज्ञापन लक्ष्य	वास्तविक	पूर्ति %	क्षमता उपयोगिता %
तप्त धातु	3.400	3.942	116	3.850	4.055	105	119
द्रव्य इस्पात	3.000	3.357	112	3.235	3.508	108	117
विक्रेय इस्पात	2.675	3.056	115	2.900	3.169	109	119

लाइट एंड मिडियम मर्चेंट मिल, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड

2003-04 के दौरान तप्त धातु, द्रव इस्पात तथा विक्रेय इस्पात की उत्पादन वृद्धि दर 2002-03 की तुलना में क्रमशः 3%, 5% और 4% थी।

वित्तीय निष्पादन

विभिन्न पहलों जैसे ब्याज में कमी करने संबंधी उपायों, प्रौद्योगिक आर्थिक निष्पादन में सुधार, लागत में कमी करने संबंधी उपायों के साथ-साथ उत्पादन और बिक्री में वृद्धि से वित्तीय निष्पादन में सुधार हुआ है। 2003-2004 के दौरान 2023 करोड़ रुपए सकल मार्जिन और 1972 करोड़ रुपए का नकद लाभ अर्जित किया गया। निवल लाभ 2002-03 के 521 करोड़ रुपए से बढ़कर 1521 करोड़ रुपए (अनंतिम) हो गया जो लगभग 192% अधिक है।

प्रौद्योगिकी-आर्थिक निष्पादन

अधिकांश प्रौद्योगिकी-आर्थिक पैरामीटरों के संबंध में आई आर एन एल ने भारतीय इस्पात उद्योग में बैंचमार्क बनाए। कुछ प्रौद्योगिक आर्थिक पैरामीटरों का निष्पादन निम्नलिखित है :-

प्रौद्योगिकी-आर्थिक पैरामीटर	इकाई	डीपीआर मानदंड	01-02	02-03	03-04
कोक दर	केजी/टीएचएम	625	524	517	522
बीएफ उत्पादकता (कार्यकारी मात्रा)	टी/सीयूएम/दिन	1.75	1.86	1.98	2.03
विशेष रिफ्रैक्टरीज खपत	के जी/टीएलएस	34.26	10.5	9.71	9.25
विशेष ऊर्जा खपत	जीसीएएल/टीएलएस	7.78	6.62	6.13	6.07
श्रम उत्पादकता	टी/व्यक्ति/वर्ष	200	228	253	262

विपणन

वी एस पी ने 2003-04 में 6174 करोड़ रु. का बिक्री कारोबार किया जो 2002-03 की तुलना में 22% अधिक है। उपयुक्त विपणन नीतियों, स्टाकयार्ड प्रचालन को सुदृढ़ करने, ग्राहकों और प्रबंधन के अच्छे संबंधों और शीघ्र निर्णय लेने से बिक्री में सुधार करने में सहायता मिली है। वर्ष के दौरान घरेलू बाजार में 5406 करोड़ रु. की बिक्री की गई और 768 करोड़ रुपए मूल्य का निर्यात किया गया।

कोककर कोयले और अकोककर कोयले की खपत

वर्ष 2002-2003 तथा 2003-2004 के दौरान कोककर कोयले और अकोककर कोयले की हुई खपत नीचे दी गई है :-

इकाई : दस लाख टन

स्रोत	2002-03	2003-04
कोककर कोयला (एमटी)		
- स्वदेशी स्रोत	0.40	0.45
- आयातित स्रोत	2.76	2.76
अकोककर कोयला	1.37	1.38

औद्योगिक संबंध

वर्ष 2003-2004 के दौरान वी एस पी में औद्योगिक संबंध शांतिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण और उत्पादन की गति को बनाए रखने के लिए सहायक रहे। अनुपस्थिति की दर को 10% से भी कम रखा गया और श्रम दिवस की कोई क्षति नहीं हुई । वर्ष के दौरान औसत श्रम उत्पादकता 262 टन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष रही।

निष्पादन आधारित प्रोत्साहन का भुगतान :-

वी एस पी ने परिणाम आधारित भुगतान (पी बी आर) की प्रोत्साहन योजना शुरू की है जिससे निष्पादन परिणामों पर कर्मचारियों की अतिरिक्त आय होती है। इस योजना की मुख्य-मुख्य बातें नीचे दी गई हैं:-

संघटक :

(क) प्रोत्साहन योजना में दो संघटक हैं अर्थात उत्पादन और प्रौद्योगिक-आर्थिक। गैर कार्यकलापों के लिए मात्रा पर वेटेड 80% और प्रौद्योगिक-आर्थिक 20% है। ई-6 स्तर तक के कार्यपालकों के लिए मात्रा पर 70% और प्रौद्योगिक आर्थिक पर 30%, डी जी एम

और उससे ऊपर के स्तर के लिए यह मात्रा, प्रौद्योगिक-आर्थिक और कतिपय समझौता ज्ञापन प्रायलों संबंधी उपलब्धियों पर आधारित है।

(ख) उपस्थिति : इस योजना के अन्तर्गत मासिक भुगतान होता है और सामान्य ड्यूटी पर वास्तविक उपस्थिति पर आधारित है।

(ग) कोर डिपार्टमेन्ट : चार विभाग अर्थात कोक ओवन, बी एफ, एस पी और एस एम एस प्रोत्साहन भुगतान के प्रयोजन से कोर विभाग माने गए हैं। इन विभागों के कर्मचारियों को अन्य विभागों की सम्भावित आय की तुलना में 20% अधिक राशि दी जाती है।

(घ) सुरक्षा : सुरक्षित कार्य प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करने के लिए दुर्घटना रहित कार्यकरण हेतु बिल्ट-इन कम्पोनेन्ट योजना है।

(ङ) विशेष योजना : प्रौद्योगिकीय अनुशासन बनाए रखने के लिए और मूल्य वर्धित उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए एस एम एस, मिलों और कोक ओवनों में एक विशेष योजना शुरू की गई है।

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (एन.एम.डी.सी.)

भूमिका

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड की स्थापना 15 नवम्बर, 1958 को हुई थी । यह देश के खनिज स्रोतों अर्थात हीरे और सिलिका के विकास और

हाईड्रोलिक उत्खनन-बैलाडिला में ब्लास्ट होल ड्रिल

दोहन संबंधी कार्य कर रहा है। इस समय इसके कार्यकलाप लौह अयस्क के खनन पर केन्द्रित हैं।

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, बैलाडिला (छत्तीसगढ़) और दौणिमलै (कर्नाटक) स्थित देश में सबसे बड़ी यंत्रीकृत खानों का प्रचालन करती है। सिलिका सैंड प्रोजेक्ट, लालपुर, इलाहाबाद में और हीरा खान, पन्ना (मध्यप्रदेश) में स्थित हैं।

एन एम डी सी की सभी लौह अयस्क उत्पादन इकाइयों और आर एण्ड डी सेन्टर को आई एस ओ 9000 प्रमाण-पत्र प्राप्त है।

लौह अयस्क

उत्पादन

2003-2004 के दौरान एन एम डी सी ने 183.3 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन किया था जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 169.7 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन किया गया था।

निर्यात

एन.एम.डी.सी. द्वारा उत्पादित लौह अयस्क का निर्यात खनिज एवं धातु व्यापार निगम (एम.एम.टी.सी.) के माध्यम से किया जाता है। लौह अयस्क का निर्यात मुख्य रूप से जापान, दक्षिण कोरिया और चीन को किया जाता है। 2002-2003 के दौरान लगभग 702.80 करोड़ रुपए मूल्य के 81.7 लाख टन लौह अयस्क (20.2 लाख टन सीधे निर्यात सहित) का निर्यात किया गया था। 2003-2004 के दौरान एन एम डी सी ने लगभग 767.66 करोड़ रुपए मूल्य के 70.9 लाख टन लौह अयस्क (21.5 लाख टन सीधे निर्यात सहित) का निर्यात किया गया।

घरेलू बिक्री

वर्ष 2002-2003 में घरेलू उपभोक्ताओं को 113.4 लाख टन लौह अयस्क की बिक्री की गई और वर्ष 2003-2004 में 135.9 लाख टन लौह अयस्क की घरेलू बिक्री की गई।

हीरे

वर्ष 2003-2004 में 71159 कैरेट हीरों का उत्पादन किया गया और पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 84348 कैरेट हीरों का उत्पादन किया गया था।

सिलिका सैंड परियोजना, लालापुर, इलाहाबाद

वर्ष 2003-2004 के दौरान 56656 टन फिनिस्ड सिलिका सैंड का उत्पादन किया गया और 57841 टन की बिक्री गई।

पूंजीगत ढांचा

कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 150 करोड़ रुपए है। प्रदत्त साम्या शेयर पूंजी 132.16 करोड़ रुपए थी। भारत सरकार के ऋण की कोई राशि बकाया नहीं है तथा इसके पास पर्याप्त आरक्षित राशि है।

वित्तीय निष्पादन

वर्ष 2002-2003 और 2003-2004 के लिए कंपनी का वित्तीय निष्पादन नीचे दिया गया है:

(करोड़ रु.)

मद	2002-2003	2003-2004 (अनन्तिम)
बिक्री/कारोबार	1293.43	1440.44
सकल मार्जिन	462.72	675.68
कर पूर्व लाभ/हानि	420.18	620.49

प्रबंध में कामगारों की भागीदारी

प्रबंध में कामगारों की भागीदारी की योजना, कर्मशाला, संयंत्र (परियोजना) और शीर्षस्थ (निगमित स्तर)तीनों स्तरों पर संतोषजनक ढंग से कार्य कर रही हैं। संयुक्त परिषदों की बैठकें नियमित रूप से होती हैं तथा लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई की जाती है।

पूंजीगत योजनाएं

क) बैलाडीला - 10/11 ए

भारत सरकार ने 18.61 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा

बैलाडिला डिपोजिट स्क्रीनिंग संयंत्र

सहित 430.50 करोड़ रुपए की अनुमानित पूंजीगत लागत से बैलाडिला निक्षेप 10/11 ए को विकसित करने की योजना को अनुमोदित किया था। परियोजना का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और परीक्षण के तौर पर उत्पादन किया जा रहा है।

ख) अल्ट्रा प्योर फैरिक आक्साइड संयंत्र, विशाखापट्टनम

विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश में अल्ट्रा प्योर फैरिक आक्साइड का उत्पादन करने के लिए एक संयंत्र स्थापित किया गया है। निर्माण कार्य पूरा हो गया है और परीक्षण के तौर पर चलाए जाने के दौरान आई समस्याओं का समाधान किया गया है और बाजार की मांग के अनुसार परीक्षण उत्पादन शुरू किया गया है।

ग) नागरनार, छत्तीसगढ़ में एन एम डी सी आयरन एंड स्टील प्लांट (रोमेल्ट प्रक्रिया)

34.89 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा सहित 298.68 करोड़ रुपए की अनुमानित पूंजीगत लागत पर रोमेल्ट प्रौद्योगिकी के आधार पर एन एम डी सी आयरन एण्ड स्टील संयंत्र स्थापित करने के लिए व्यवहार्यता रिपोर्ट को एन एम डी सी बोर्ड ने 19.12.98 को अपनी 322वीं बैठक में मंजूरी दी थी। जगदलपुर के समीप नागरनार में नए स्थल पर संयंत्र को कार्यान्वित करने का कार्य शुरू किया गया है। रोमेल्ट शाप के लिए करार को अन्तिम रूप देने अथवा सांविधिक अनुमति प्राप्त होने, इनमें से जो भी पहले से की तारीख से 24 माह के भीतर संयंत्र को चालू करने की अनुसूची है।

ऊर्जा संरक्षण

उत्खनित लौह अयस्क की प्रति टन ऊर्जा खपत नीचे दी गई हैं:-

क) विद्युत ऊर्जा - कि.वा./उत्खनन टन

वर्ष	लक्ष्य	वास्तविक
2001-2002	2.70	2.24
2002-2003	2.13	2.30
2003-2004	2.20	2.19

ख) डीजल की खपत-लीटर/उत्खनन टन

वर्ष	लक्ष्य	वास्तविक
2001-2002	0.27	0.29
2002-2003	0.28	0.31
2003-2004	0.29	0.31

श्रम शक्ति की स्थिति

31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी की विभिन्न इकाइयों में श्रम शक्ति का ब्यौरा निम्नलिखित है:

ग्रुप	नियमित कर्मचारियों की कुल संख्या
(1)	(2)
क	992
ख	1090
ग	2510
घ (सा./खलासी के अलावा)	1141
घ (सा./खलासी)	80
कुल	5813

मांडवी पैलेट्स लिमिटेड

मांडवी पैलेट्स लिमिटेड (एम पी एल), गोवा नेशनल मिनरल डेवलपमेंट लिमिटेड और निजी क्षेत्र की एक कम्पनी मैसर्स चौगुले एंड कम्पनी के जरिए भारत सरकार द्वारा चालू की गई संयुक्त क्षेत्र की एक कंपनी है। गोवा में कंपनी का अपना पैलेट संयंत्र है। इस संयंत्र की वार्षिक क्षमता 18 लाख टन है। लाभप्रदता में सुधार करने के लिए एम पी एल ने एक पुनर्संरचना योजना तैयार की है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ एन एम डी सी द्वारा और निवेश करना शामिल है और निवेश नहीं किए जाने की स्थिति में मूल समूह अर्थात मैसर्स चौगुले एण्ड कम्पनी लिमिटेड (सी सी एल) कम्पनी की सम्पूर्ण शेयरधारिता का अधिग्रहण करने की पेशकश करेगी। इस मामले के संबंध में एन एम डी सी के निदेशक मंडल की 326वीं बैठक में विचार-विमर्श हुआ था और इस्पात मंत्रालय ने भी सी सी एल के शेयरों की बिक्री मैसर्स सी सी एल के पक्ष में करने के लिए सहमति दे दी है। एम पी एल में एन एम डी सी द्वारा धारित 10 रु. अंकित मूल्य के शेयरों की कुल 6.0 करोड़ रुपए की राशि का अधिकतम दो किस्तों में भुगतान किया जाना है। इस संबंध में मैसर्स चौंगले की सहमति अभी प्राप्त होनी है।

जे. एण्ड के. मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड

जम्मू और कश्मीर राज्य में विभिन्न खनिज उत्पादों का विकास करने के लिए एन.एम.डी.सी. की एक सहायक कंपनी जम्मू एण्ड कश्मीर मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (जे.एंड.के.एम.डी.सी) 19.5.89 को निगमित की गई। जे. एंड के. मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड के 74 प्रतिशत शेयर एन.एम.डी.सी. से पास हैं और शेष

26 प्रतिशत शेयर राज्य सरकार के सरकारी क्षेत्र के उपक्रम जे. एंड के. मिनरल लिमिटेड के पास हैं। 30,000 टन वार्षिक क्षमता के डेड बर्न्ट मैग्नेसाइट (डी.बी.एम.) संयंत्र के लिए भारत सरकार द्वारा नवंबर, 1992 में मंजूरी दी गई थी। 1993-94 में डी बी एम पर सीमा शुल्क में कमी और इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट के कारण परियोजना की व्यवहार्यता बुरी तरह से प्रभावित हुई। अत: परियोजना का निर्माण कार्य प्रारंभ नही किया जा सका।

कंपनी के निदेशक मण्डल ने 23 मई 2002 को हुई अपनी 57वीं बैठक में इस कम्पनी के सभी विकासात्मक कार्यकलापों और कच्चे मेगनेसाइट अथवा डी बी एम बिक्री के मंद परिणाम को देखते हुए इसे बंद करने का निर्णय लिया। उसने यह भी निर्णय लिया कि इसे बंद करने के मामले को जे के एम डी सी और जे के एल एम के बोर्डों को संदर्भित कर दिया जाए। एन एम डी सी के बोर्ड ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और इच्छा व्यक्त की है कि इसे अनुमोदन के लिए इस्पात मंत्रालय को भेज दिया जाए। तथापि, जम्मू और कश्मीर सरकार और जे के एम एल के निर्णय अभी नहीं मिले हैं।

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के.आई.ओ.सी.एल.)

भूमिका

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के.आई.ओ. सी.एल.) जो आई एस ओ 9001:9000 तथा आई एस ओ 14001 और गोल्डन स्टार ट्रेडिंग हाउस कम्पनी है, देश की सबसे बड़ी शत-प्रतिशत निर्यातोन्मुखी कंपनी है। इसकी स्थापना अप्रैल, 1976 में ईरान की लौह अयस्क सांद्रण की दीर्घकालीन आवश्कताओं को पूरा करने के लिए की गई थी। कुद्रेमुख में 75 लाख टन वार्षिक क्षमता के लौह अयस्क सान्द्रण संयंत्र की स्थापना की गई थी। इस परियोजना का पूर्ण निधियन ईरान द्वारा किया जाना था। तथापि, 2550 लाख अमरीकी डालर देने के बाद ईरान ने ऋण का संवितरण बन्द कर दिया था। इसलिए यह परियोजना भारत सरकार द्वारा प्रदत्त निधि से समय-सूची के अनुसार पूरी की गई ।

हालांकि, यह परियोजना अपनी समय-सूची के अनुसार समय पर चालू हो गई थी, परन्तु ईरान में राजनैतिक गतिविधियों के कारण उन्होंने सांद्रण की कोई मात्रा नहीं उठाई। विविधीकरण उपायों के रूप में सरकार ने मई, 1981 में मंगलौर में 30 लाख टन वार्षिक क्षमता वाले पैलेट संयंत्र के निर्माण को मंजूरी प्रदान की। संवर्धन/संशोधन तथा 5 लाख टन वार्षिक क्षमता की शाफ्ट पैलेटाइजेशन फर्नेस की स्थापना करके संयंत्र की क्षमता को बढ़ाकर 40 लाख टन कर दिया गया। इस संयंत्र में 1987 से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो गया और अब यह चीन, ताईवान तथा विक्रम इस्पात, इस्पात इंडस्ट्रीज, आई एम आई एल और किस्को जैसी स्वदेशी स्पंज लोहा इकाइयों को भी, धमन भट्टी और डी आर ग्रेड पैलटों का निर्यात कर रही है। ईरान, जापान और चीन को लौह अयस्क सान्द्रण का निर्यात किया जाता है।

उत्पादन

वर्ष 2003-2004 के दौरान लौह अयस्क सांद्रण और लौह अयस्क पैलेटों के उत्पादन हेतु क्रमश: 50 लाख टन और 34 लाख के लक्ष्य निर्धारित किए गए। वर्ष के दौरान वास्तविक उत्पादन 50.90 लाख टन हुआ जो लक्ष्य की 102% पूर्ति है। इसी प्रकार वर्ष के दौरान पैलेटों का वास्तविक उत्पादन 35.94 लाख टन हुआ जो लक्ष्य की 106% पूर्ति है। वर्ष के दौरान 77,000 टन पैलेट चूर्ण सृजित किया गया।

के आई ओ सी एल ऑटोजिनस मिल

वित्तीय निष्पादन

वर्ष 2003-04 के लिए पैलेटों का कुल 36.71 लाख टन का उत्पादन करके कम्पनी द्वारा पिछले वर्ष के दौरान किए गए 34.50 लाख टन के अधिकृत उत्पादन से अधिक उत्पादन करके एक नया रिकार्ड बनाया गया। यह लक्ष्य का 108% है और पिछले वर्ष की तुलना में 6% अधिक है।

वर्ष 2003-2004 के लिए अब तक की सबसे अधिक 1024 करोड़ रुपए की कुल बिक्री की गई जबकि पिछले वर्ष 727.14 करोड़ रुपए की पिछली सबसे अधिक बिक्री हुई थी। यह पिछले वर्ष की तुलना में 41% अधिक है और लक्ष्य का 157% है। सकल मार्जिन/पीबीटी/पीएटी के भी अच्छा होने की आशा है।

प्रौद्योगिक-आर्थिक प्रायल जैसे ऊर्जा खपत आदि में सुधार हुआ है और समझौता ज्ञापन लक्ष्यों की बहुत अच्छी श्रेणी में है।

फरवरी, 2004 के दौरान 133.40 रुपए का सबसे अधिक मासिक कारोबार दिसम्बर, 2003 के दौरान 121.50 करोड़ रुपए के पिछले अधिकतम कारोबार को पार कर गया।

वर्ष के दौरान 36.71 लाख टन पैलेटों (पैलेट चूरे सहित) का उत्पादन अब तक किसी भी वर्ष उत्पादित पैलेटों से सबसे अधिक है। पिछले वर्ष 34.5 लाख टन पैलेटों का उत्पादन हुआ था।

वर्ष के दौरान 36.28 लाख टन (पैलेट चूरे सहित) का प्रेषण पिछले वर्ष के दौरान प्रेषित 35.39 लाख टन के पिछले सबसे अधिक स्तर को पार कर गया।

पिछले तीन वर्षों के दौरान निर्यात से आय नीचे दी गई है :-

(लाख रुपए)

वर्ष	सान्द्रण	पैलेट	योग
2003-2004	20017	82364	102381
2002-2003	21135	51579	72714
2001-2002	21571	50598	72169

श्रम शक्ति की स्थिति

31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड में कर्मचारियों की कुल संख्या निम्नानुसार थी:

ग्रुप	31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचति जनजाति के कर्मचारियों सहित कर्मचारियों की कुल संख्या
क	483
ख	234
ग	1250
घ	150
घ (सफाई कर्मचारी)	35
योग	2152

* इसमें के आई ओ सी एल से के आई एस सी ओ में तैनात किए गए 39 कर्मचारी शामिल नहीं हैं।

प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी

शाला और संयुक्त परिषदों में कामगारों को शामिल करके कंपनी के संयंत्रों में प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। इन परिषदों का उद्देश्य परामर्श की प्रक्रिया तैयार करना और कर्मचारियों में भागीदारी और जुड़ाव की भावना उत्पन्न करना है। यह उत्पादन संसाधनों का इष्टतम उपयोग करने और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा रहा है।

मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड (मॉयल)

मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड (मॉयल) की स्थापना 1962 में की गई थी। यह भारत में मैंगनीज अयस्क का उत्पादन करने वाली सबसे बड़ी कंपनी है। 31.03.2004 की स्थिति के अनुसार मॉयल में भारत सरकार के 81.57% शेयर और महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश सरकार के क्रमश: 9.62% और 8.81% शेयर थे।

मॉयल निम्नलिखित विभिन्न ग्रेडों के मैंगनीज अयस्कों का उत्पादन और बिक्री का कार्य करती है:

- फैरो मैंगनीज के उत्पादन के लिए उच्च श्रेणी का अयस्क,
- सिलिको मैंगनीज के उत्पादन के लिए मध्यम श्रेणी का अयस्क,
- तप्त धातु के उत्पादन के लिए अपेक्षित धमन भट्टी ग्रेड के अयस्क
- डायक्साइड अयस्क जो शुष्क बैटरी सैल बनाने के काम आता है।

पूंजीगत ढांचा

31.03.2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी की अधिकृत पूंजी 30 करोड़ रुपए और प्रदत्त पूंजी 15.33 करोड़ रुपए है।

उत्पादन और वित्तीय परिणाम

2002-2003 और 2003-2004 के दौरान कंपनी के वास्तविक तथा वित्तीय निष्पादन का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

क्र. सं.	वस्तु	2002-2003	2003-2004
1.	**उत्पादन**		
	क) मैंगनीज अयस्क (हजार टन)	714.00	799.05
	ख) ई एम डी (टन)	930.00	975.00
	ग) फैरो मैंगनीज (टन)	5996.00	10900.00
2.	**कारोबार (करोड़ रुपए)**	177.88	224.36
3.	**कर-पूर्व लाभ (करोड़ रुपए)**	27.83	39.72

ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा संरक्षण के लिए राष्ट्रीय नीति के अनुसार और उत्पादन लागत नियंत्रित करने के लिए भी कंपनी ने इस क्षेत्र में बचत अभियान पर विशेष ध्यान दिया है। ऊर्जा संरक्षण और बिजली की खपत न्यूनतम करने के लिए ऊर्जा संबंधी लेखा परीक्षा सहित विभिन्न उपाय किए गए हैं।

पूंजीगत योजनाएं/परियोजनाएं

मॉयल की निम्नलिखित योजनाएं/परियोजनाएं बनाने/कार्यान्वित करने की योजना है :

1. इलैक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डायक्साइड संयंत्र (ई.एम.डी.)

विविधीकरण योजना के एक भाग के रूप में 600 टन वार्षिक क्षमता का इलैक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डायक्साइड (ई एम डी) संयंत्र स्थापित किया गया है। इसके उत्पाद की क्वालिटी अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार है। घरेलू बाजार में इसकी अच्छी मांग को देखते हुए इस संयंत्र की क्षमता को दो बार 200-200 टन वार्षिक बढ़ाया गया है। अपने ईएमडी संयंत्र के लिए कम्पनी को आई एस ओ-9002 प्रमाण-पत्र मिला है। मौजूदा क्षमता 1000 टन वार्षिक है।

2. नया ई.एम.डी. संयंत्र

परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का काम मेकॉन को दिया गया था। मेकॉन ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। कम्पनी इस रिपोर्ट का अध्ययन कर रही है। तथा विद्युत की उच्च लागत के कारण इस रिपोर्ट की पुन: जांच की जा रही है।

एकीकृत खनिज सज्जीकरण संयंत्र, डोंगरी बुजुर्ग खान (मॉयल)

3. फैरो मैंगनीज संयंत्र-बालाघाट खान

यह संयंत्र अक्तूबर, 1998 में चालू किया गया था और विभिन्न तकनीकी प्राचलों का स्थिरीकरण किया गया था। 2002-2003 के दौरान संयंत्र ने पिछले वर्ष में किए गए 8763 मी. टन की तुलना में 5996 मी. टन एच सी फैरो मैंगनीज का उत्पादन किया। पिछले वर्ष 7789 मी. टन बिक्री की तुलना में इस वर्ष के दौरान 8100 मी. टन की बिक्री हुई। इस उत्पाद की क्वालिटी देश में सबसे अच्छी है तथा इसने बाजार में अपनी अच्छी पहचान बना ली है। उत्पादन की औसत लागत पर मैंगनीज अयस्क की आदान लागत के आधार पर इस संयंत्र ने 2002-2003 के दौरान 16.66 लाख रुपए का नकद लाभ अर्जित किया जबकि पिछले वर्ष इसे 121.68 लाख रुपए का नकद लाभ हुआ था। फैरो मैंगनीज के औसत विक्रय मूल्य में गिरावट के साथ-साथ विद्युत की लागत में वृद्धि होने से संयंत्र के लाभ में कमी हुई है।

प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी

कम्पनी ने प्रमुख समस्याओं की समीक्षा करने और उनका समाधान करने के लिए आधारभूत स्तर से लेकर शीर्षस्थ परिषद, जो निगमित स्तर पर कार्य करती है, सहित कामगारों के प्रतिनिधियों के संघ के लिए एक तंत्र गठित किया है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक यूनिट में वर्क्स/कैंटीन/शिकायत समितियां भी संतोषजनक रूप से काम कर रही हैं। विभिन्न वर्गों के कर्मचारी इन समितियों के सदस्य हैं।

कार्मिक

31 मार्च, 2004 को कंपनी की कार्मिक शक्ति की संरचना इस प्रकार है:-

ग्रुप	योग
क	202
ख	188
ग	1373
घ	5396
योग	7159

कुल 7159 कर्मचारियों में 833 महिलाएं हैं।

एम एस टी सी लिमिटेड

भूमिका

एम.एस.टी.सी. लिमिटेड (जो पहले मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लिमिटेड के नाम से जानी जाती थी), को 9 सितम्बर, 1964 को कम्पनी अधिनियम, 1956 के तहत निगमित किया गया था। इस समय यह कम्पनी सेल/आर. आई.एन.एल. आदि के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले फैरस तथा गैर-फैरस स्क्रैप का निपटान करती है तथा अन्य प्राइवेट ट्रेडरों के समान ही स्पर्धा में सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों और सरकारी विभागों से प्राप्त स्क्रैप, कोक, परिसज्जित इस्पात और पेट्रोलियम उत्पादों का आयात भी करती है।

पूंजीगत संरचना

31.03.2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी 5 करोड़ रुपए और प्रदत्त पूंजी 2.20 करोड़ रुपए थी जिसमें से लगभग 90% भारत के राष्ट्रपति के पास और शेष 10% स्टील फर्नेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया, आयरन एंड स्टील स्क्रैप एसोसिएशन आफ इंडिया तथा अन्य के पास है। प्रदत्त पूंजी 2.20 करोड़ रुपए है, जिसमें वर्ष 1993-94 में 1:1 अनुपात में जारी किए गए बोनस शेयर भी शामिल हैं।

आरक्षित निधि और अधिशेष

31.03.2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी की आरक्षित एवं अधिशेष 80.68 करोड़ रुपए (अनंतिम) है।

कार्यकलाप

कंपनी के कार्यकलापों के दो प्रमुख क्षेत्र हैं विक्रय एजेंसी और विपणन।

(क) विक्रय एजेंसी

कंपनी एकीकृत इस्पात संयंत्रों से उत्पन्न होने वाले लौह स्क्रैप तथा अन्य गौण स्क्रैप का निपटान करती है तथा अन्य सरकारी क्षेत्र के उद्यमों और रक्षा मंत्रालय सहित सरकारी विभागों के स्क्रैप तथा अधिशेष भंडार आदि का भी निपटान करती है।

(ख) विपणन

फरवरी, 1992 में माध्यमीकरण समाप्त होने के पश्चात् ईएएफ और आईएफ इकाइयों द्वारा कम खपत और डीआरआई उत्पादों की उपलब्धता के कारण देश में आयातित स्क्रैप की मांग काफी कम हो गई थी। अत: कम्पनी ने अपनी आयात क्षमता बढ़ा दी है तथा अब यह आर्डर देने और लेने के आधार पर बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा अपेक्षित आदान सामग्री का आयात करती है। आयात की जाने वाली मदों में पेट्रोलियम उत्पाद, एल ए एम कोक, डी.आर. पैलेट्स, एच क्वायलें, गलन स्क्रैप आदि शामिल हैं। यह भारत में भी मदों की खरीद-फरोख्त करती है।

2003-2004 के दौरान निष्पादन

वास्तविक और वित्तीय निष्पादन नीचे दिया गया है

(करोड़ रुपये)

	2002-03	2003-04 (अनंतिम)
क. वास्तविक		
(i) विक्रय एजेंसी/ घरेलू	628.00	728.00
(ii) विपणन	2045.00	3376.54
(iii) कारोबार की कुल मात्रा	2673.00	4104.54
ख. वित्तीय		
(i) कारोबार	2079.33	3365.90
(ii) प्रचालन लाभ (ब्याज, मूल्य ह्रास और अन्य प्रावधान से पूर्व)	17.06	33.20
(iii) ब्याज, मूल्य ह्रास और प्रावधान	0.32	1.01
(iv) कर पूर्व लाभ	16.74	32.19
(v) लाभांश	83%	——

6. जनशक्ति (31.3.2004 की स्थिति के अनुसार)

31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी की जन शक्ति निम्नानुसार थी :-

कार्यपालक	गैर-कार्यपालक	गैर-कार्यपालक
मुख्यालय (कोलकाता) क्षेत्रीय कार्यालय	42	78
कोलकाता (ईआर)	10	20
नई दिल्ली (एन आर)	14	15
मुम्बई (डब्ल्यू आर)	13	15
चेन्नई (एस आर) शाखा कार्यालय	11	8
बैंगलोर	8	11
विजाग	10	9
वडोदरा	4	3
भोपाल	1	0
राउरकेला	1	1
दुर्गापुर	1	0
त्रिचि	1	0
हजीरा	2	0
योग	118	160

स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड (सिल)

कम्पनी का स्पंज लोहा संयंत्र लौह अयस्क डलों तथा 100% अकोकर कोयले से स्पंज लोहे (इस्पात गलन विद्युत चाप भट्टियों द्वारा प्रयुक्त फैरस स्क्रैप का आंशिक प्रतिस्थापन्न) का उत्पादन करने के लिए तकनीकी-आर्थिक शक्यता स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम/यूनिडो की सहायता से, आरम्भ में 30,000 टन वार्षिक क्षमता के प्रदर्शन-संयंत्र के रूप में स्थापित किया गया था। इस इकाई में नियमित उत्पादन नवम्बर 1980 से शुरू हुआ। प्रदर्शन संयंत्र के सफल प्रचालन को देखकर कंपनी ने अक्तूबर,

1985 में दूसरे किल्न की स्थापना करके इसकी क्षमता 30,000 टन प्रतिवर्ष से बढ़ाकर 60,000 टन प्रतिवर्ष कर दी है। कम्पनी ने विद्युत चाप भट्टियों द्वारा पहले अप्रयोज्य स्पंज लोहे के चूरे (5 मि.मि. से कम आकार) के ब्रिक्वेटिंग के लिए एक संयंत्र का भी सफलतापूर्वक रूपांकन और निर्माण किया है। ब्रिक्वेटिंग संयंत्र अक्टूबर, 1987 में चालू हो गया ।

किल्न से छोड़ी गयी संवदेनशील ऊष्मा का बिजली उत्पादन के लिए प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने हेतु 1.3.1993 से एक नई अभिनिव परियोजना चालू की गयी। ऐसा करने से न केवल प्रक्रिया की तापीय क्षमता में पर्याप्त सुधार हुआ है बल्कि बाहर से ली जाने वाली बिजली पर से निर्भरता भी कम हुई और इससे लागत में कमी आई।

स्पंज लोहे (स्पंज लोहा चूरे सहित) को उच्च गुणवत्ता वाले (न्यून फास्फोरस) कच्चे लोहे में स्मेल्टिंग करने के लिए सिल द्वारा 45,000 टन वार्षिक क्षमता की सबमर्ज्ड आर्क फर्नेस परियोजना स्थापित की गई है। जनवरी, 96 तक परीक्षण के तौर पर चलाने के बाद यह सिद्ध हुआ कि इस संयंत्र से विशेष ग्रेड के कच्चे लोहे के लिए अपेक्षित स्तर पर रासायनिक संघटन प्राप्त किया जा सकता है। प्रतिकूल आर्थिक कारणों से वाणिज्यिक प्रचालन प्रारम्भ किए बिना ही संयंत्र को बन्द कर दिया गया। अत: लगभग 30 करोड़ रुपए की पूंजीगत लागत से स्थापित मौजूदा अवसंरचना का उपयोग करने के लिए 1.89 करोड़ रुपए के मामूली निवेश से संयंत्र को सिलिका मैंगनीज का उत्पादन करने वाली इकाई में परिवर्तित कर दिया गया। संशोधन कार्यों के पूरा होने के बाद भी वाणिज्यिक कारणों से, संयंत्र का प्रचालन नहीं किया जा रहा है।

पूंजीगत संरचना

कंपनी की प्राधिकृत पूंजी 66 करोड़ रुपए हैं। 31.3.2003 की स्थिति के अनुसार प्रदत्त पूंजी 65.10 करोड़ रुपए थी। (जिसमें से 64.27 करोड़ रुपए भारत सरकार के पास और शेष 0.83 करोड़ रुपए के शेयर आन्ध्र प्रदेश सरकार के पास हैं।)

उत्पादन और वित्तीय निष्पादन

2002-03 तथा 2003-04 के दौरान कम्पनी का उत्पादन तथा वित्तीय निष्पादन नीचे तालिका में दिया गया है:-

तालिका

	1.4.03 से 31.3.04 की अवधि की उपलब्धियाँ	2002-03 के लिए वर्ष की विशेष उपलब्धियां (31.3.2003)
उत्पादन		
- स्पंज लोहा (टन)	69,509	71,603
- विद्युत उत्पादन (लाख किलोवाट)	88	81
- क्षमता उपयोग (%) बिक्री	116	119
बिक्री (टन)		
- स्पंज लोहा	68,071	73,943
- बिक्री कारोबार (लाख रुपए)	5886	4,414
- आन्तरिक संसाधनों का सृजन (लाख रुपए)	2617 2302	1,061 747 **
- निवल लाभ (लाख रुपए)(पीबीटी)		

** वर्ष 2002-2003 के लिए आस्थगित कर-परिसम्पत्तियों सहित

48,900 टन के लक्ष्य की तुलना में दिसम्बर, 2003 तक 'स्पंज लोहे का वास्तविक उत्पादन 53264 टन हुआ और यह लक्ष्य का 109% है तथा 118% क्षमता उपयोगिता है।

स्पंज आयरन इंडिया लि. (सिल) का संयंत्र, पलोंचा जिला, आंध्र प्रदेश

बिक्री और लाभप्रदता

निर्धारित किए गए 48,900 टन के लक्ष्य की तुलना में 31.12.2003 तक वास्तविक प्रेषण 50,116 टन हुआ जो लक्ष्य की 102% उपलब्धि दर्शाता है।

31 दिसम्बर, 2003 के अन्त तक प्रचालनों से 1449 लाख रुपए का निवल लाभ हुआ। 1694 लाख रुपए का सकल लाभ हुआ।

श्रम शक्ति (31.03.2004 की स्थिति के अनुसार)

दिनांक 31.03.2004 की स्थिति के अनुसार कंपनी में कार्यपालकों की कुल संख्या 66 थी जिसमें अनुसूचित जाति के 16 (24 प्रतिशत) और अनुसूचित जनजाति के 1 (1.52%) थे एक महिला (1.52%) और एक शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति (1.52%) था।

क्र. सं.	ग्रुप	कर्मचारियों की कुल संख्या	अ. जा.	अ. जन.	भूतपूर्व सैनिक	शा.वि.	महिला
1	ग्रुप क	66	16	1	—	1	1
2	ग्रुप ख	58	11	4	—	—	1
3	ग्रुप ग	134	26	6	—	2	4
4	ग्रुप घ	72	14	12	—	—	13
5	ग्रुप घ 1	—	—	—	—	—	—
	योग	330	67	23	—	3	19

प्रबंधन में कर्मचारियों की भागीदारी

भारत सरकार के निदेशों के अनुसार कम्पनी के सभी कार्यकलापों में कामगारों और अधिकारियों की भागीदारी हेतु विभिन्न समितियां गठित की गई हैं। इस सम्बन्ध में अधिकारियों और कर्मचारियों से प्राप्त होने वाले सुझावों की उचित रूप से समीक्षा की जाती है और व्यवहार्य पाए जाने पर इन पर अमल किया जाता है। इसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं।

फैरो स्क्रेप निगम लिमिटेड

भूमिका

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफ एस एन एल) पूर्ण रूप से एम एस टी सी लि. की सहायक कम्पनी है जिसकी प्रदत्त पूंजी 2.00 लाख रुपए है।

यह कम्पनी राउरकेला, बर्नपुर, भिलाई, बोकारो, विशाखापट्टनम, दुर्गापुर, डोलवी और डुबरी में स्थित आठ

रेल वैगन से प्रोसेसिंग के लिए स्क्रैप सामग्री उठाता हिंद मैरिन क्रैन

स्लैबों का स्कर्फिंग कार्य, एफ एस एन एल, बी एस पी, सेल

इस्पात संयंत्रों में बनने वाले धुलिमल और कचरे से स्क्रैप प्राप्ति और उसको संसाधित करने का कार्य करती है।

इस स्क्रैप को इस्पात संयंत्रों को पुश्चक्रण/निपटान के लिए भेजा जाता है। कम्पनी को स्क्रैप की श्रेणी के आधार पर विभिन्न दरों पर गुणत्ता के आधार पर संसाधन प्रभार प्राप्त होता है। स्क्रैप का सृजन इस्पात तैयार करने में और रोलिंग मिलों में भी, होता है। इसके अतिरिक्त, कम्पनी स्लैबों की स्कर्फिंग, बी ओ एफ स्लैग का सम्भाल आदि कार्य भी करती है।

वास्तविक और वित्तीय निष्पादन

फैरो स्क्रैप निगम लि. का पिछले दो वर्षों और वर्ष 2003-04 का उत्पादन तथा वित्तीय निष्पापदन निम्नानुसार है :

मद	2002-03	2003-04
वास्तविक स्क्रैप की प्राप्ति (लाख मीट्रिक टन)	16.29	19.36
उत्पादन का बाजार मूल्य (करोड़ रुपये में)	716.77	851.84
वित्तीय निष्पादन (लाख रुपए) कुल कारोबार अर्थात विविध आय आदि सहित वसूला गया सेवा प्रभार आदि	7904.76	8560.00
सकल लाभ (ब्याज और मूल्य हास से पूर्व) (लाख रुपए)	1549.88	1681.00
ब्याज और मूल्य हास (लाख रुपए)	731.46	855.00
कर पूर्व लाभ (लाख रुपए)	818.42	826.00
बिक्री से प्राप्ति (रुपए प्रति मी. टन)	451.16	421.49

श्रमशक्ति

31.12.2004 की स्थिति के अनुसार अनु. जाति/अनु. जनजाति सहित कंपनी के रोजगार संबंधी आंकड़े निम्नानुसार हैं:-

	कार्यपालक		गैर-कार्यपालक		योग
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	
निगमित कार्यालय	25	–	22	4	51
राउरकेला इकाई	18	–	155	3	175
बर्नपुर इकाई	10	–	64	5	79
भिलाई इकाई	22	–	168	1	191
बोकारो इकाई	15	–	157	1	173
दुर्गापुर इकाई	17	–	136	3	156
विजाग इकाई	14	–	190	2	206
डोलवी इकाई	15	–	85	–	100
डुबरी	5	–	35	–	40
योग	140	–	1016	19	1171

औद्योगिक संबंध

एफ एस एन एल अपनी सभी इकाइयों में सौहार्दपूर्ण और स्वस्थ औद्योगिक संबंध बनाए हुए हैं। कंपनी में हड़ताल, घेराव/बंद आदि के कारण श्रम दिवसों का कोई नुकसान नहीं हुआ है। प्रबन्धन और यूनियन के बीच बहुत सौहार्द पूर्ण संबंध हैं और यह स्थापना के समय से ही बनाए रखा जा रहा है।

प्रबन्धन में कामगारों की भागीदारी

कामगारों और कम्पनी के कारोबार से संबंधित सभी समस्याओं पर ज्वांट फोरम कमेटी में विचार-विमर्श किया जाता है जिससे प्रबन्धन और यूनियनों में परस्पर सहयोग एवं तालमेल बनाने में सहायता मिलती है।

मेकॉन लिमिटेड

भूमिका :

मेकॉन देश का प्रथम इंजीनियरी और परामर्शी संगठन है। इसे आई एस ओ : 9001 प्रमाणन प्राप्त है। देश में इस्पात संयंत्रों की स्थापना करने के लिए इंजीनियरी और परामर्शी सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मेकॉन की स्थापना की गई थी। मेकॉन ने न केवल परंपरागत क्षेत्रों में अपितु विद्युत, पर्यावरण इंजीनियरी, सड़क और राजमार्गों, तेल और गैस पाइप लाइन, सूचना प्रौद्योगिकी, रक्षा परियोजनाओं आदि में भी अपनी सेवाओं का विविधिकरण किया है।

कंपनी का पंजीकृत कार्यालय रांची, झारखंड में है और इसका क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर में है। दिल्ली, कलकत्ता, मुम्बई और चैन्नई में इंजीनियरी कार्यालय हैं। इसके अतिरिक्त मेकॉन के भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, राउरकेला और डुबरी में स्थल कार्यालय तथा विदेश में लागोस (नाइजीरिया) में एक कार्यालय है।

पूंजी संरचना

कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 400 लाख रुपए है जिसकी तुलना में प्रदत्त पूंजी 242 लाख रुपए है। 242 लाख रुपए की प्रदत्त पूंजी में से वर्ष 1996-97 के दौरान 40.31 लाख रुपए के बोनस शेयर जारी किए गए थे।

वित्तीय निष्पादन

1998-99 से लगातार ऋणात्मक सकल मार्जिन होने के बाद कम्पनी ने वित्तीय वर्ष 2003-04 में 2.30 करोड़ रुपए का घनात्मक सकल मार्जिन अर्जित किया है। वर्ष 2003-04 के दौरान पर्याप्त कार्य करारों से इसके वित्तीय निष्पादन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की आशा है।

प्रबंधकीय पहल

वर्ष के दौरान ग्राहक आवश्यकताओं और भारत तथा विदेशी कंपनियों के साथ कार्य करने को ध्यान में रखते हुए

अनेक कदम उठाए गए। कंपनी द्वारा उठाए गए कुछ कदम निम्नानुसार हैं:

1. स्टेट ऑफ आर्ट प्रौद्योगिकी को शामिल करना:

मेकॉन, थर्मल और हाइडल पॉवर प्लांटों के पुनरुद्धार, आधुनिकीकरण और संवर्धन (आरएमयू), रेजीड्यूअल लाइफ असेसमेंट (आर एल ए) और लाइफ एक्सटेंशन स्टडी (एल ई एस) से पूरा तरह से जुड़ा रहा है और इसने राज्य विद्युत बोर्डों/यूटिलिटीज से अनेक कार्य प्राप्त किए हैं।

2. प्रौद्योगिकी और कारोबार संवर्धन के सम्बन्ध में समझौता ज्ञापन/करार

वर्ष के दौरान कंपनी ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन/करार किए हैं:

- सिविल कन्स्ट्रक्शन और अवसंरचना विकास परियोजनाएं प्राप्त करने और निष्पादित करने के लिए ई आर ए कंस्ट्रक्शन (इंडिया) लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन।
- विद्युत परियोजनाओं से संबंधित करार प्राप्त करने और निष्पादित करने के लिए कारोबार विकास हेतु के ओ पी ई सी के साथ सहयोग समझौता।
- पोर्ट और हार्बर सेक्टरों के लिए परामर्श और प्रबंधन परामर्शी सेवाओं के प्रावधान के संबंध में बी एम टी एशिया पैसिफिक पी ई लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन।

3. आई.एस.ओ-9001 प्रमाणन

मेकॉन देश का पहला संगठन है जिसे आई एस ओ-9001 प्रमाणन प्राप्त है। परामर्श, रूपांकन एवं इंजीनियरिंग, संयंत्र और उपस्करों की अधिप्राप्ति, निर्माण और परियोजना प्रबंधन सेवाओं तथा टर्नकी परियोजनाओं के निष्पादन के लिए यह प्रमाणन जनवरी, 2006 तक वैध है।

4. कारोबार विविधीकरण

तेल और गैस पाइपलाइन, एल.एन.जी./एल.पी.जी. टर्मिनल, रिफाइनरी, पैट्रो-रसायन, पी ओ एल टर्मिनल, विद्युत उत्पादन और प्रेषण, तथा वितरण सूचना प्रौद्योगिकी, सामग्री संभाल, पत्तन, सड़क, राजमार्ग, पुल, जल आपूर्ति आदि जैसी अवसंरचना मेकॉन के कारोबार विविधीकरण के लिए अभिज्ञात प्रमुख क्षेत्र हैं और इसने इन क्षेत्रों में कार्य प्राप्त करने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की गई है। कम्पनी में कई राज्यों में विभिन्न परियोजनाएं निष्पादित कर रही है।

विदेशी कार्य

- **नाइजीरिया:** अजाऊकुटा स्टील प्लांट को पुन: चालू करने के लिए परियोजना प्रबन्धन और तकनीकी सेवाएं ।
- **बंग्लादेश :** बंग्लादेश स्टील री-रोलिंग मिल्स लि. के लिए इंजीनियरिंग सेवाएं।
- **ईरान:** मैसर्स फूलाद टैक्नीक ईरान की तवाज़ोन परियोजना के लिए तकनीकी सेवाएं प्रदान करने के लिए इंजीनियरों की तैनाती और मोबारकेश स्टील कम्पनी, ईरान को इंजीनियरी सेवाएं देना ।

- **वियतनाम:** साउथ बेसिक कैमिकल्स कंपनी, वियतनाम की एल्यूमिनियम हाइड्रो-आक्साइड परियोजना के आधुनिकीकरण के लिए परामर्शी सेवाएं

जनशक्ति की स्थिति

कम्पनी ने अपने कर्मचारियों की संख्या जो 31.3. 2003 को 2150 थी, को घटाकर, 31.03.2004 की स्थिति के अनुसार 1593 कर ली है। कर्मचारियों की इस संख्या में से 387 कर्मचारी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति के हैं।

औद्योगिक संबंध

औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र में कम्पनी ने कर्मचारियों के साथ शान्तिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे।

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड

भूमिका

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एच एस सी एल) को जून, 1964 में आधुनिक एकीकृत इस्पात संयंत्रों के सभी निर्माण कार्यों को करने के लिए सरकारी क्षेत्र का एक सक्षम संगठन बनाने के प्रमुख उद्देश्य से निगमित किया गया था। एच एस सी एल ने इस्पात संयंत्रों में स्थापना से चालू करने तक के सभी निर्माण कार्य किए हैं। निर्माण कार्यों में कमी होने से कंपनी ने अन्य क्षेत्रों जैसे विद्युत, कोयला, तेल और गैस एवं औद्योगिक और बस्ती परिसरों के अलावा अन्य अवसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे सड़कों और राजमार्गों, पुल, बांध, भूमिगत संचार और परिवहन प्रणालियों में भी अपने कार्यों का विविधीकरण किया है। इन कार्यों के लिए उच्च नियोजन, समन्वय और आधुनिक जटिल तकनीकी अपेक्षित होती है।

कंपनी ने पाइलिंग, मृदा जांच और बृहत फांउडेशन कार्य, हाई राइज स्ट्रक्चर, स्ट्रक्चरण फैब्रीकेशन और स्थापना, रिफ्रैक्ट्री, प्रौद्योगिकीय स्ट्रक्टर और पाइपलाइन, उपस्कर स्थापना, इन्सट्रूमेन्टेशन जिसमें परीक्षण और उन्हें चालू करना भी शामिल है, के क्षेत्रों में भी विशेषज्ञता विकसित की है।

कोक ओवनों और धमन भट्टियो के चालू रहते मरम्मत करने सहित भारी मरम्मत और पुनर्निर्माण कार्यों तथा एकीकृत इस्पात संयंत्रों के अन्य क्षेत्रों में कार्य करने के लिए भी कंपनी ने विशेषज्ञता प्राप्त की है।

पूंजीगत संरचना

प्राधिकृत पूंजी 150 करोड़ रुपए तथा प्रदत्त पूंजी 117.10 करोड़ रुपए है।

वित्तीय निष्पादन

वर्ष 2002-2003 और 2003-2004 की अवधि के दौरान कम्पनी का वित्तीय निष्पादन नीचे दिया गया है:-

मात्रा : टन

(मूल्य : करोड़ रुपए)

वर्ष	2002-2003	2003-2004
कारोबार	276.99	310.88
सकल लाभ (पीबीआईडीटी)	3.90	17.69
निवल हानि	136.35*	86.37** (लेखा परिक्षित नहीं)

*हानि में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति के लिए हुए व्यय का 1/5 शामिल है।

** हानि में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर 65.26 करोड़ रुपए का व्यय शामिल है।

आर्डर बुकिंग

2003-2004 के दौरान एच एस सी एल ने 513 करोड़ रुपये मूल्य के आर्डर प्राप्त किए । इसका ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

इस्पात क्षेत्र	=	रु. 67 करोड़
गैर इस्पात क्षेत्र	=	रु. 446 करोड़
योग	**=**	**रु. 513 करोड़**

जन शक्ति

1.4.2003 की स्थिति के अनुसार जनशक्ति	**=**	**2771**
1.4.2004 की स्थिति के अनुसार जनशक्ति	=	2394

जुलाई, 1999 में मंजूर पुनर्संरचना पैकेज के पश्चात वीआरएस प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की संख्या नीचे दी गई है :-

2000-01	:	6134
2001-02	:	1239
2002-03	:	3153
2003-04	:	346
योग	:	10872

भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड (बी आर एल)

भूमिका

भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड (बी आर एल) भारत सरकार का एक उपक्रम है। इसे 22 जुलाई 1974 को निगमित किया गया था। इस समय इसकी निम्नलिखित चार इकाइयां हैं:-

1) भंडारीदह रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, भंडारीदह

2) रांची रोड रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, रामगढ़

3) भिलाई रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, भिलाई और

4) इफिको रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, रामगढ़

कंपनी विभिन्न प्रकार के उष्मसहों के निर्माण और पूर्ति का कार्य करती है। यह न केवल एकीकृत इस्पात संयंत्रों को ही अपितु छोटे और मझोले इस्पात संयंत्रों को भी उष्मसहों की सप्लाई करती है।

पूंजीगत ढांचा

31 मार्च, 2004 को कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 246.00 करोड़ रूपए थी जबकि प्रदत्त पूंजी 208.7 करोड़ रुपए थी।

उत्पादन निष्पादन

2002-2003 और 2003-2004 के दौरान कंपनी की विभिन्न इकाइयों का उत्पादन निष्पादन निम्नानुसार रहा:-

(मात्रा : टन में)

(करोड़ रुपये)

2002-03		2003-04 (अनंतिम)			
वास्तविक		लक्ष्य		वास्तविक	
मात्रा	कीमत	मात्रा	कीमत	मात्रा	कीमत
35160	56.20	68081	105.18	62174	112.92

वित्तीय निष्पादन

वर्ष 2002-2003 के दौरान बी.आर.एल को 74.50 करोड़ लाख रू की निवल हानि हुई। वर्ष 2003-2004 के दौरान कम्पनी ने संविधिक बकाया को पूरा करने के लिए पुनरूद्धार योजना के अन्तर्गत मंजूर 55.00 करोड़ रूपए के गैर योजना ऋण पर ब्याज को ध्यान में रखे बिना 1.01 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया ।

बर्ड ग्रुप की कंपनियां

भूमिका

बर्ड एंड कंपनी लिमिटेड के उपक्रमों का 1980 में राष्ट्रीयकरण किए जाने के परिणामस्वरूप शेयरधारिता पद्धति के आधार पर निम्नलिखित सात कंपनियां इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गईं:

(क) उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कंपनी लि. (ओ.एम.डी.सी.)

(ख) बिसरा स्टोन लाइम कंपनी लि. (बी.एस.एल.सी)

(ग) करनपुरा डेवलपमेंट कंपनी लि. (के.डी.सी.एल.)

(घ) स्कॉट एंड सेक्सबाई लि. (एस.एस.एल.)

(ड.) ईस्टर्न इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (ई.आई.एल.)

(च) बुराकर कोल कंपनी लि. (बुराकर)

(छ) बोरिया कोल कंपनी लि. (बोरिया)

कम्पनियों की स्थिति निम्नलिखित दर्शाई गई है :

क) बुराकर और बोरिया पहले कोयला कंपनियां थीं। कोयला खानों के राष्ट्रीयकरण के बाद ये अप्रचलनात्मक बन गई। तथपि ये कंपनियां केवल आयकर और अन्य अनिवार्य मामलों के निपटान हेतु कार्य कर रही हैं।

ख) ई आई एल एक निवेश कम्पनी है। बर्ड ग्रुप के अंतर्गत प्रचालनरत कंपनियों के साम्या शेयरों में ईआईएल का प्रमुख हिस्सा है।

ग) ओ.एम.डी.सी., बी.एस.एल.सी. और के.डी.सी.एल. इस ग्रुप के अंतर्गत खनन कंपनियां हैं।

राष्ट्रीयकरण के समय कम्पनियों की स्थिति

जब बर्ड ग्रुप की कम्पनियां इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आईं, उस समय सभी कम्पनियां वित्तीय रूप से रूग्ण थीं और उनके ऊपर विभिन्न समस्याओं के कारण भारी बोझ था। भारत सरकार से वित्तीय सहायता मिलने से ये समस्याएं जो मुख्यतया भारी श्रम शक्ति, कार्यपूंजी के हास तथा बकाया देनदारियां थीं, को काफी हद तक निपटाया जा सका।

श्रमशक्ति को युक्तिसंगत बनाना

मंत्रालय से अनुदान सहायता के रूप में मिले सहयोग से प्रचालनरत कम्पनियों ने स्वैच्छिक सेवा निवृति योजना (वी आर एस) को कार्यान्वित करके श्रमशक्ति को युक्तिसंगत बनाया तथा 1992-93 से लेकर 31.3.2003 तक कुल 3869 कर्मचारियों को पृथक किया। कम्पनीवार श्रमशक्ति

की स्थिति ओ एम डी सी (481), बी एस एल सी (2004) के डी सी एल (31) तथा एस एस एल (252) है।

मंत्रालय से गैर-योजना ऋण से बी एस एल सी ने चालू वित्तीय वर्ष के दौरान वी आर एस को कार्यान्वित करना आरम्भ किया है और 15 कर्मचारियों को पृथक किया है।

1980 में जब से बर्ड ग्रुप की कम्पनियां इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आई तब से वर्ष 2003-04 में पहली बार समग्र रूप से इन्होंने 42.32 करोड़ रुपए का लाभ दर्ज किया।

पृथक-पृथक प्रचालनरत कम्पनियों का कार्य-निष्पादन

उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कम्पनी लि. (ओएमडीसी)

खानों की स्थान-स्थिति, कार्यकलाप और पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें उड़ीसा के क्योंझर जिले में बारबिल के आस-पास स्थित हैं । इसके कार्यकलाप लौह अयस्क और मैंगनीज अयस्क के खनन और विपणन से संबंधित हैं। इसकी प्रधिकृत और प्रदत्त पूंजी 60 लाख रुपए है ।

निष्पादन

लोहा और इस्पात उद्योग में मन्दी आने के कारण इसके उत्पादों की मांग में अत्यधिक कमी आ गई और कम्पनी की स्थिति खराब हो गई । अब इस्पात उद्योग में तेजी आई है । इसलिए अब लौह अयस्क की मांग में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप कम्पनी समग्र परिवर्तन के चरण में पहुंच गई है । कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है :-

(लाख रुपए)

	2002-03	2003-04 (अनंतिम)
उत्पादन (000 एम टी)	1573	3130
बिक्री	4786	22411
सकल मार्जिन (सरकारी ऋणों पर ब्याज और मूल्यह्रास को प्रभावित करने से पूर्व)	1309	16316
केवल लाभ/हानि	**314**	**9965****

* असाधारण मदें अर्थात सरकार से सुरक्षित ऋणों पर ब्याज और मूल्यह्रास के लिए अधिशेष प्रावधान शामिल हैं।

** कराधान के लिए प्रावधान के पश्चात निवल लाभ

विविधीकरण

कम्पनी ने परियोजनाओं का विविधिकारण किया है । स्पंज लोहे की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए इसने ठाकुरानी में 100 टीपीए का स्पंज लोहा संयंत्र चालू किया है ।

बिसरा स्टोन लाइम कम्पनी लिमिटेड (बीएसएलसी)

खानों की स्थान-स्थिति, कार्यकलाप और पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें उड़ीसा के सुन्दरगढ़ जिले के बीरमित्रपुर के आसपास स्थित हैं। लाइम स्टोन और डोलोमाइट का खनन और विपणन कम्पनी के मुख्य कार्यक्लाप हैं । कम्पनी की प्राधिकृत और प्रदत्त पूंजी 50 लाख रुपए है ।

निष्पादन

इस्पात बनाने की प्रौद्योगिकी में बदलाव आने से बी एस एल सी के उत्पादों की मांग में तेजी से गिरावट आई और कम्पनी को भारी हानि हुई। योजना ऋण और गैर-योजना ऋण के रूप में भारत सरकार को वित्तीय सहायता से कम्पनी ऋण मुक्त हो गई और उत्पादन में वृद्धि करने के लिए कुछ कदम उठाए । उत्पादन मिश्र बदलने और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए उपाए किए गए । मांग की स्थिति में कुछ स्थिरता आने से निष्पादन में सुधार के संकेत दिखाई दिए हैं । कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है :-

(लाख रुपए)

	2002-03	2003-04 (अनंतिम)
उत्पादन ('000 टन)	982	916
सकल मार्जिन	2293	1952
सरकारी ऋणों पर ब्याज मूल्यह्रास से पूर्व	+3	-141
निवल लाभ/हानि	-3932	-5041

स्टील ऑथारिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) के साथ समझौता ज्ञापन

पूर्वी क्षेत्र में सेल को उत्पादों का प्रेषण करने के लिए कम्पनी ने 31 अक्टूबर 2003 को सेल के साथ एक समझौता ज्ञापन किया है । इससे काफी हद तक मांग की स्थिति स्थिर होगी ।

करनपुरा डेवलपमेन्ट कम्पनी लिमिटेड (के डी सी एल)

खानों की स्थान, स्थिति, कार्यकलाप और पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें बिहार के सिरका के आसपास स्थित हैं। यह कम्पनी सीमेन्ट उत्पादन के लिए उपयुक्त चूना पत्थर का उत्पादन करती है । इसकी प्राधिकृत और प्रदत्त पूंजी क्रमश: 40 लाख रुपए और 20 लाख रूपए है ।

निष्पादन

कम्पनी अपने उत्पाद मुख्य रूप से झारखण्ड और बिहार राज्यों में बेचती है । इन राज्यों में सीमेन्ट ग्रेड के चूना-पत्थर की मांग में कुछ अधिक उतार-चढ़ाव है । इसके फलस्वरूप कम्पनी का निष्पादन प्रभावित होता है ।

कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है :

(लाख रुपए)

	2002-03	2003-04 (अनंतिम)
उत्पादन ('000 टन)	90	73
बिक्री	193	164
सरकारी ऋणों पर ब्याज मूल्यह्रास से पूर्व	+ 5	+2
निवल लाभ/हानि	- 88	-109

भावी परिदृश्य

जहां कम्पनी की खानें स्थित हैं, उन क्षेत्रों के सीमेन्ट संयंत्रों के मालिक क्लिंकर प्लान्ट स्थापित कर रहे है । आशा है कि क्लिंकर प्लान्ट स्थापित होने से कम्पनी के उत्पादों का प्रेषण स्थिर हो जाएगा ।

स्काट एण्ड सेक्सबाई लिमिटेड (एस एस एल)

खानों की स्थान-स्थिति, कार्यकलाप और पूंजी संरचना

कम्पनी के कार्यकलाप कोलकाता में हैं । यह कम्पनी मुख्यत: गहरे टयूबबैल लगाने और खनिजों के गवेषण कार्य में लगी हुई है । कम्पनी प्राधिकृत और प्रदत पूंजी 5 लाख रुपए है ।

निष्पादन

सामान्य कार्य परिस्थितियों में निरन्तर व्यवधान के कारण कम्पनी को नवम्बर 1992 में अपनी फैक्टरी और सभी कार्यस्थलों पर कार्य बन्द करने की घोषणा करनी पड़ी । नवम्बर 1996 से कार्य पुन: शुरू हुआ । आर्डरों के अभाव, पुरानी और जीर्ण मशीनों तथा अधिक जनशक्ति जैसी समस्याओं के कारण कम्पनी का निष्पादन संतोषजनक नहीं है।

(लाख रुपए)

	2002-03	2003-04 (अनंतिम)
बिक्री	151	152
सरकारी ऋणों पर ब्याज मूल्यह्रास से पूर्व	- 4	0
निवल लाभ/हानि	488	-583

- पिछले वर्षों के बट्टे खाते में डाली गई राशि सहित

पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में स्काट एण्ड सैक्सबाई लिमिटेड (एस एस एल) का योगदान

एस एस एल ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में कुछ भूमिका अदा की है । भूमिगत जल जो इस राज्य में कम है, का चाय बागानों के उपयोग में सहायता करके असम राज्य में चाय बगानों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । कम्पनी ने इस राज्य में चाय बागानों के लिए लगभग 600 गहरे टयूबवैल लगाए हैं ।

तत्पश्चात् कम्पनी ने अपने कार्यकलापों का विस्तार त्रिपुरा राज्य में किया है और 31.3.2004 तक राज्य में लगभग 109 गहरे ट्यूबवैल लगाए । कम्पनी को इस राज्य में और कार्यों के आर्डर मिले हैं । त्रिपुरा राज्य में गहरे टयूबवैल लगाना, सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरी विभाग, ग्रामीण विकास परियोजना का एक हिस्सा है । खराब राजनीतिक स्थिति से उत्पन्न भारी व्यवधानों के बावजूद पूर्वोत्तर क्षेत्र में कंपनी ने कार्यकलाप जारी रखे ।

बंजर भूमि विकास

वृक्ष लगाकर स्वच्छ और हरित कार्यक्रम के एक भाग के रूप में हरियाली विकसित करने के लिए बंजर भूमि को समतल करने का प्रस्ताव है ।

लेखा-परीक्षा पैरा - लेखा-परीक्षा टिप्पणियां

वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग ने निदेश जारी किए हैं कि माननीय प्रधानमंत्री ने इच्छा व्यक्त की है कि मंत्रालय की कार्यप्रणाली के बारे में लेखा परीक्षा टिप्पणियों के सार को

मंत्रालय/विभाग की वार्षिक रिर्पोट में शामिल किया जाए । इस्पात मंत्रालय के संबंध में स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) तथा कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के आई ओ सी एल) के बारे में लेखा परिक्षा द्वारा की गई टिप्पणियाँ अनुलग्नक-IV (पृ॰ 55-57) पर दी गई हैं ।

अनुलग्नक-IV

सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की कार्य प्रणाली के बारे में लेखा परीक्षा की टिप्पणियों का सार

(क) कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी (के आई ओ सी एल) (2003 की रिपोर्ट संख्या 3 का पैरा 23.1.1) वाणिज्यिक

सरकारी क्षेत्र के दो अन्य उपक्रमों सहित कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के आई ओ सी एल) ने कम सल्फर कम फास्फोरस युक्त कच्चे लोहे और डक्टाइल आयरन स्पन पाइपों का विनिर्माण करने के लिए जून, 1995 में एक संयुक्त उद्यम कम्पनी (जे वी सी) बनाई थी। के आई ओ सी एल ने जे वी सी में साम्या के रूप में 50 करोड़ रुपए का अंशदान किया था। तथापि जे वी सी के कार्यकलापों को संसदीय नियन्त्रण से बाहर रखने के लिए जे वी सी द्वारा के आई ओ सी एल को अंशदान के मूल्यों तक शेयर आबंटित नहीं किए गए। इस तथ्य के बावजूद कि जे वी सी अच्छी तरह से कार्य नहीं कर रहा है और सरकार के विशिष्ट निर्देशों के विरूद्ध है, के आई ओ सी एल रियायती ऋण सहित जे वी सी को सहायता करता रहा। मार्च, 2002 की स्थिति के अनुसार यह राशि 227.50 करोड़ रुपए है जिसके परिणामस्वरूप 24.23 करोड़ रुपए के ब्याज की हानि हुई।

(ख) स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) (2003 की रिपोर्ट संख्या 3 का पैरा 23.6.1) वाणिज्यिक

मंत्रालय द्वारा वरिष्ठ अधिकारी के नामांकन में विलम्ब और उसके फलस्वरूप मुख्य बातचीत शुरू करने में विलम्ब होने के कारण स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) को जुलाई, 2000 से जून, 2001 के दौरान स्वदेशी कोककर कोयले की सुपुर्दगी के लिए उच्च दर तय करनी पड़ी जिसके फलस्वरूप 27.68 करोड़ रुपए की हानि हुई।

(ग) स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) (2003 की रिपोर्ट संख्या 4 का पैरा 3.1) वाणिज्यिक

कारोबार पुनर्संरचना योजना (स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड) :- कम्पनी की खराब वित्तीय स्थिति में सुधार करने और इसे लाभप्रद बनाने के लिए भारत सरकार ने एक कारोबार एवं वित्तीय पुनर्संरचना पैकेज (फरवरी, 2000) मंजूर किया था। वित्तीय पुनर्संरचना उपायों का उद्देश्य कम्पनी की ऋण सेवा क्षमता में सुधार करके वित्तीय जोखिम को कम करना है। कारोबार पुनर्संरचना उपायों का उद्देश्य कार्बन इस्पात के अपने प्रमुख कारोबार में कम्पनी की दीर्घकालीन प्रतिस्पर्धात्मकता उपलब्ध कराना है।

वित्तीय पुनर्संरचना योजना में अन्य बातों के साथ-साथ 5073 करोड़ रुपए का इस्पात विकास निधि (एस डी एफ) ऋण और भारत सरकार के 381 करोड़ रुपए के ऋण को माफ करना शामिल है।

स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना (वी आर एस) के जरिए जनशक्ति में कमी करने में वित्तीय व्यवस्था करने के लिए बाजार से 1500 करोड़ रुपए का ऋण जुटाने के लिए गारंटी देने हेतु भी सरकार सहमत हो गई है। प्रमुख रूप से पिछले ऋणों को लौटाने की बाध्यताओं को पूरा करने के लिए सेल द्वारा बाजार से

1500 करोड़ रुपए के ऋण और ब्याज के लिए भारत सरकार ने गारंटी दी है।

फरवरी, 2000 में वित्तीय एवं कारोबार पुनर्संरचना पैकेज मंजूर करते समय केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने यह आशंका व्यक्त की थी कि अकेले वित्तीय पुनर्संरचना उबरने के लिए पर्याप्त नहीं है। कारोबार पुनर्संरचना योजना के कार्यान्वयन में सुस्ती से निष्पादन तथा जनशक्ति लागत सहित प्रचलनात्मक लागतों में कमी करने की बड़े पैमाने पर कार्रवाई के अभाव में वित्तीय पुनर्संरचना के लाभ निरर्थक हो गए। इनमें कई निर्णय अर्थात् स्थाई रूप से घाटे वाली इकाइयों को बन्द करना, सेवा निवृत्ति की आयु घटाने आदि के लिए सेल बोर्ड द्वारा मना करना भी शामिल है। 1.4.1999 से 8000 करोड़ रुपए से अधिक का वित्तीय पुनर्संरचना प्रस्ताव कार्यान्वित करने के बाद भी सेल को भारी हानि हो रही है।

इन परिस्थितियों में वित्तीय और कारोबार पुनर्संरचना से यह अपनी वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं कर सकी बल्कि इसकी स्थिति बद से बदतर हो गई। मंजूर कारोबार पुनर्संरचना योजना के कार्यान्वयन में हुई खराब प्रगति की कम्पनी तथा भारत सरकार द्वारा कम्पनी को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए गम्भीरता से समीक्षा करने की आवश्यकता है।

(घ) स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया लि. (सेल)
(2003 की रिपोर्ट संख्या 4 पैरा 3.2) वाणिज्यिक

भिलाई इस्पात संयंत्र की रेल एण्ड स्ट्रक्चरल मिल : एक लाख टन रेलस का उत्पादन करने के लिए 10 लाख टन (एम टी) स्टेज के अन्तर्गत भिलाई इस्पात संयंत्र (बी एस पी) की एक इकाई रेल एण्ड स्ट्रक्चरल मिल (आर एस एम) 1960 में चालू की गई थी। 5.00 लाख टन रेलस और 2.5 टन स्ट्रक्चरल की वार्षिक उत्पादन क्षमता से इस मिल का उन्नयन 2.5 एम टी स्टेज (जून, 1966) किया गया था। रेलवे की बदलती हुई कड़ी निविर्दिष्टियां तथा लम्बी रेलों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए बी एस पी ने विभिन्न आधुनिकीकरण योजनाएं शुरू की थीं। खरीदे गए कुछ उपस्कर स्थापित नहीं किए जा सके/उपयोग नहीं किए जा सके। 1988 की शक्यता रिपोर्ट में परिकल्पित आधुनिकीकरण के दो चरण शुरू ही नहीं किए गए। इसके अतिरिक्त 1998 में तैयार की गई शक्यता रिपोर्ट अब तक भी किसी ठोस परियोजना में परिवर्तित नहीं हो सकी। उदारीकरण के बाद की प्रतिस्पर्धी अवधि में अपनी अग्रणी स्थिति बनाए रखने के लिए दीर्घकालीन निवेश योजना के अभाव में कम्पनी को उस स्थिति का सामना करना पड़ा जहां एक प्राइवेट फर्म ने रेल निर्माण में इसके अति लाभप्रद भाग पर कब्जा कर लिया।